Marathwada University
Library
Aurangabad

भूमिका

स्वातंत्र्योत्तर-काल में साहित्य की ओर विभिन्न आयामों से देखने की और उस पर शोधकार्य करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है. हिन्दी से एम,ए करते समय नारी होने के नाते मेरे मन में यह सहज जिज्ञासा जाग उठी कि प्रत्येक युग के लेखकों ने स्त्री को किस दृष्टिसे देखा है. इसी जिज्ञासा के कारण मैं अनेक पुस्तकें टटोलती रही, तो पाया भक्ति, रीति, भारतेन्दु, द्विवेदी तथा छायावादी साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन हुआ है. सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत इस साहित्य को देखा गया है. यह अनुभव हुआ है भारतेन्दु तक के साहित्य में स्त्री का कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व ही नहीं उभर सका है. वास्तव में १९३५ के बाद ही नारी अपने समग्र-व्यक्तित्व के साथ साहित्य में व्यक्त होने लगती है. अध्ययन के दौरान मैंने ने पाया कि हिन्दी--साहित्य के काव्य तथा उपन्यासों में व्यक्त नारी का संशोधनात्मक, अध्ययन हो चुका है. "प्राचीन साहित्य भारतीय साहित्य में नारी": "डॉ. गजानन शर्मा," "हिन्दी काव्य में नारी": "डॉ.वल्लभदास तिवारी", "हिन्दी काव्य में नारी भावना": "शैलकुमारी", "हिन्दी महाकाव्यों में नारीचित्राण": डॉ. श्यामसुंदर व्यास. "आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारी":"श्रीमती सरला दुआ," "हिन्दी नाटकों में नायिका परिकल्पना" : "प्रेमलता अग्रवाल, "प्रसाद के नारी चरित्र" : "देवेश ठाकुर" "प्रेमचंद के नारी पात्र" :"ओम अवस्थी," "प्रेमचन्द का नारी चित्रण:गीतालाल. "हिन्दी उपन्यासों में नारी चित्रण": बिन्दु अग्रवाल, "हिन्दी उपन्यासों में नारी"÷ मनोवैज्ञानिक विश्लेषण - विमल सहस्त्रबुध्दे, "हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में नारी चरित्र":"डॉ. रामविनोद सिंह," हिन्दी उपन्यासोंमें नारी की परिकल्पना": सुरेश सिन्हा, "हिन्दी कहानी में नारी की भूमिकाएँ" : "सुशिला मितल" आदि परन्तु कहानियों में और

खासकर स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में जो स्त्री उभरी हुअी है, उसका स्वतंत्र अध्ययन नहीं के बराबर है. स्वातंत्र्यपूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर कहानी विधापर जो दर्जनों प्रबन्ध लिखे गये हैं उनमें नारीचित्रण से सम्बन्धित एक प्रकरण मात्र है. मात्र एक प्रकरण में स्त्री की मानसिकता विस्तृत विवेचन हो नहीं सका है. ऐसा मैंने अनुभव किया इसकारण इस पर स्वतंत्र खोज की आवश्यकता मुझे महसूस हुअी.

एक दूसरा महत्वपूर्ण कारण यह भी था कि स्वातंत्र्योत्तर काल में समग्र भारतीय परिवेश तेजी से एक होते गया है. इस एक परिवेश में साँस लेनेवाले दो भिन्न भाषाओं के सृजनात्मक लेखक किसप्रकार स्त्री को चित्रित करते हैं यह जानने की भी जिज्ञासा इस खोज के मूल में रही है.

इसप्रकार का तुलनात्मक अध्ययन आजतक नहीं हुआ है. यह अपनें ढंग का मूलभूत और मौलिक काम है.

इस शोधकार्य के लिए हिन्दी के "मोहन राकेश", "कमलेश्वर". से लेकर"मणिका मोहिनी," "दीप्ति खाण्डेलवाल" तथा मराठी के "अरविंद गोखाले" से"बाबुराव बागुल" तक की कहानियोंका तथा उनपर लिखे गये आलोचनात्मक ग्रंथों का अध्ययन किया गया है. दोनों भाषाओं की कुल १५० के करीब कहानियों के आधारपर निष्कर्ष निकाले गये हैं, ये निष्कर्ष ही इस प्रबन्ध के मौलिक अंश हैं.

प्रबंध के पहले प्रकरण में भारतीय स्त्री का विकासात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है. वैदिक काल से लेकर स्वातंत्र्येपूर्व काल तक भारतीय समाज व्यवस्था में नारी की जो स्थिति थी, उसका विवेचन किया गया है, विविध सुधार आन्दोलनों का तथा शिक्षा की सुविधा प्राप्त हो जाने के बाद उत्पन्न विविध समस्याओं का विस्तृत विश्लेषण इस प्रकरण में किया गया है. यह प्रकरण सैध्दान्तिक तथा ऐतिहासिक अध्ययन का है.

हिन्दी-मराठी कहानी में व्यक्त "पत्नी" का स्वरूप, उसकी समस्याएँ, पत्नी-रूप पर लिखी गयी दोनों भाषाओंकी कहानियों का विश्लेषण एवं तथा मूल्यांकन दूसरे प्रकरण की विशेषता है.

तीसरे प्रकरण का सम्बन्ध कामकाजी महिलाओंके के साथ है. इन महिलाओं की समस्याएँ, उनकी मानसिकता लिखी गयी दोनों भाषाओं की कहानियाँ तथा उनका तुलनात्मक अध्ययन इसमें प्रस्तुत किया है.

चौथे प्रकरण में माँ, विवाह, अर्थ और यौन से संत्रस्त नारी के स्वरूप और समस्याओं का अध्ययन दोनों भाषाओं की कहानियों के आधारपर प्रस्तुत किया गया.

पांचवे और अंतीम प्रकरण में उपर्युक्त चार प्रकरणों के आधार--पर समकालीन यथार्थ के सन्दर्भ में "स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी-मराठी कहानियों में व्यक्त स्त्री" में किया गया है. दोनों भाषाओं की कहानियों के साहित्यिक मूल्यांकन का प्रयत्न भी हुआ है.

सबसे पहले मेरे मार्गदर्शक डॉ. रणसुभेजी का तथा उनके परिवार-वालों का जिक्र करना चाहूंगी. जिन्होंने मुझे अपनेही घर का सदस्य मानकर मुझ जैसी आलसी व्यक्ति से यह प्रबन्ध पूरा करवा लिया उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर मै औपचारिकता को निभाना नहीं चाहती.

दयानंद कला महाविद्यालय के प्राचार्य श्री. शिवाजीराव पाटील की भी मैं विशेष आभारी हूँ.

स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष श्री भूदेवजी पाटील की मैं विशेष आभारी हूँ, जिनका प्रत्यक्ष तो नहीं पर अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग मिला है. मेरे गुरुवर्य डॉ. घनश्यामदासजी भुतड़ा , प्रा. गो. न. मग्गीरवार [अँग्रेजी विभाग], डॉ. भगवान देशमुख [इतिहास विभाग], सौ. पद्माजी चामले [हिन्दी विभाग] की भी मैं विशेष आभारी हूँ.

दयानंद कला महाविद्यालय के ग्रंथपाल श्री. विश्वंभर जोगदंड, सहाय्यक श्री. चंद्रकांत पुरोहित, श्री. डांडू लांडगे, श्री. माने,

कभी भी मैं -हृदय से ऋणी हूँ, जिन्होंने सतत सहयोग दिया है. दयानंद विज्ञान महाविद्यालय के ग्रंथपाल श्री. नरसिंह पाटक, शिवाजी ग्रंथालय लातूर के श्री. अडसूळ की भी मैं विशेष आभारी हूँ.

हमारे ही कॉलेज के १२ वी कला के विद्यार्थी श्री. मल्लिकार्जून कलशेट्टी ने बड़ी ईमानदारी तथा बिना थकावट के प्रबंध का टंकलेखन किया है, उसके लिए मैं उनकी कृतज्ञ हूँ.

मेरे भाई शैलेन्द्र तथा योगेन्द्र जो हमेशा मुझे शोध प्रबन्ध पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करते रहें उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मैं अपना दायित्व महसूस करती हूँ.

स्नेह, वात्सल्य और आशिर्वाद के कारण मेरी यहाँतक की पढ़ाई हो सकी है, उस माँ-पिता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना तो संभव ही नहीं है. अध्ययन के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने की मेरी इच्छा को इन दोनों ने साकार किया है, इसके लिए मेरे पास शब्द नहीं है, मैं जिन्दगीभर उनके ऋण में रहना चाहूंगी.

अन्त में इस बात का उल्लेख करना आवश्यक होगा कि लातूर जैसे छोटे कस्बे में शोध-प्रबन्ध पूरा करते समय अनेक कठनाईयों को पार करना पड़ता है. इन कठनाईयों से गुजरते समय जिन लोगों ने प्रत्यक्ष--अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग दिया है, उन सबके प्रति आभार.

-- कु. तनुजा श्रीधार कुलकर्णी.
T. S. Kulkarni